एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 07 (जुलाई, 2026)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

पोंक मूल्य संवर्धन द्वारा कृषि श्रमिक से स्वरोजगार एवं उद्यमिता: एक सफल गाथा

*डॉ. तुषारकुमार यू. पटेल
सह-प्राध्यापक, कृषि महाविद्यालय, भरूच, नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, नवसारी, गुजरात, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: tushagri.ank@nau.in

दक्षिण गुजरात में मौसमी खेत मजदूर कम मजदूरी, अस्थिर रोजगार तथा सीमित बाजार पहुँच जैसी चुनौतियों का सामना करते हैं। इन समस्याओं के समाधान हेतु कृषि मेला, किसान शिविर तथा एटीएमए/लाइन विभाग के माध्यम से वैज्ञानिक फसल कटाई, कटाई उपरांत प्रबंधन, पोंक का मूल्य संवर्धन एवं बाजारोन्मुख उत्पादन का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। प्रशिक्षण के उपरांत लाभार्थियों ने प्रतिदिन लगभग २० किलोग्राम वाणी ज्वार का प्रसंस्करण कर ७–८ किलोग्राम पोंक तैयार किया तथा स्वच्छ प्रसंस्करण, ग्रेडिंग और प्रत्यक्ष विपणन के माध्यम से भरूच, अंकलेश्वर एवं सूरत के बाजारों में सफलतापूर्वक बिक्री की। परिणामस्वरूप एक परिवार की ५०-दिवसीय मौसमी आय लगभग ₹१०,००० से बढ़कर ₹३,७५,००० हो गई, जिसमें लगभग ₹१,७५,००० का शुद्ध लाभ प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त प्रत्येक गाँव में १०–१५ लोगों के लिए मौसमी रोजगार के अवसर भी सृजित हुए। यह सफलता गाथा सिद्ध करती है कि वैज्ञानिक कृषि प्रसार, मूल्य संवर्धन तथा प्रभावी बाजार संपर्क के समन्वय से मौसमी खेत मजदूरों को सफल लघु उद्यमियों में परिवर्तित कर ग्रामीण आजीविका, उद्यमिता एवं आर्थिक सशक्तिकरण को सुदृढ़ बनाया जा सकता है।

कुंजी शब्द: पोंक, वाणी ज्वार, मूल्य संवर्धन, कटाई उपरांत प्रसंस्करण, मौसमी खेत मजदूर, उद्यमिता, ग्रामीण आजीविका, आय में वृद्धि, बाजार संपर्क, रोजगार सृजन।

ग्रामीण गुजरात में खेत मजदूर कृषि व्यवस्था की रीढ़ हैं, किन्तु मौसमी रोजगार, कम मजदूरी तथा सीमित बाजार पहुंच के कारण उनकी आजीविका अस्थिर बनी रहती है। उनके पारंपरिक कौशल का पर्याप्त उपयोग नहीं हो पाता। यह सफलता की कहानी दर्शाती है कि वैज्ञानिक प्रशिक्षण, तकनीकी मार्गदर्शन, मूल्य संवर्धन तथा बाजार संपर्क के माध्यम से खेत मजदूरों को लघु उद्यमियों में परिवर्तित किया जा सकता है। इस पहल से उनकी आय एवं रोजगार के अवसरों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई तथा ग्रामीण आजीविका और सामुदायिक आर्थिक विकास को नई दिशा मिली।

मौसमी खेत मजदूरों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति

दक्षिण गुजरात के अंकलेश्वर, भरूच एवं झगड़िया क्षेत्र के अधिकांश मौसमी खेत मजदूर सीमित आय, अस्थिर रोजगार तथा बाजार तक सीमित पहुँच जैसी सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों का सामना करते हैं। उनकी आजीविका मुख्यतः ₹३००–४०० प्रतिदिन की दैनिक मजदूरी पर आधारित है, जिससे मौसमी आय लगभग ₹८,०००–१०,००० तक ही सीमित रहती है। यद्यपि उन्हें वाणी ज्वार की उपयुक्त कटाई तथा कटाई उपरांत प्रबंधन का व्यावहारिक अनुभव होता है, किंतु मूल्य संवर्धन, ग्रेडिंग, पैकेजिंग, विपणन एवं उद्यमिता संबंधी जानकारी के अभाव में वे अपने कौशल का उचित आर्थिक लाभ प्राप्त नहीं कर पाते। परिणामस्वरूप उनकी आय एवं बचत सीमित रहती है और वे अस्थिर आजीविका पर निर्भर बने रहते हैं।

खेतों से बाज़ार तक: क्षमता निर्माण एवं प्रशिक्षण पहल

कौशल, बाजार संपर्क तथा संस्थागत सहयोग को सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से अंकलेश्वर, भरूच एवं झगड़िया क्षेत्र के मौसमी खेत मजदूरों के लिए कृषि मेला, किसान शिविर तथा एटीएमए एवं लाइन विभाग के माध्यम से क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों में वाणी ज्वार की वैज्ञानिक कटाई, कटाई उपरांत प्रबंधन, पोंक का मूल्य संवर्धन, ग्रेडिंग, पैकेजिंग, स्वच्छ प्रसंस्करण तथा बाजारोन्मुख उत्पादन का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। प्रदर्शन, समूह चर्चा एवं सहभागितापूर्ण प्रशिक्षण के माध्यम से पारंपरिक ज्ञान को वैज्ञानिक तकनीकों से जोड़ते हुए मजदूरों में कौशल, आत्मविश्वास एवं उद्यमिता का विकास किया गया, जिससे आय, रोजगार और बाजार से जुड़ाव में उल्लेखनीय सुधार हुआ।

अनाज से मूल्यवर्धित उत्पाद तक: पोंक मूल्य श्रृंखला

पोंक मूल्य श्रृंखला यह दर्शाती है कि किस प्रकार पारंपरिक ज्ञान, वैज्ञानिक तकनीकों एवं बाजारोन्मुख प्रबंधन के समन्वय से वाणी ज्वार को उच्च गुणवत्ता वाले मूल्यवर्धित उत्पाद में परिवर्तित किया जा सकता है। इस प्रक्रिया को तीन प्रमुख चरणों—कच्चे माल की खरीद एवं गुणवत्ता नियंत्रण, प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन तथा परिष्करण, पैकेजिंग एवं विपणन—में विभाजित किया गया है।

चरण १: कच्चे माल की खरीद और गुणवत्ता नियंत्रण

कच्चे माल की गुणवत्ता ही उत्कृष्ट पोंक उत्पादन का आधार है। इस चरण में केवल उच्च गुणवत्ता वाली वाणी ज्वार की दूधिया अवस्था की बालियों का चयन किया जाता है, जो अपने कोमल, रसदार दानों तथा अधिक प्राकृतिक मिठास के कारण पोंक निर्माण के लिए सर्वाधिक उपयुक्त मानी जाती हैं। उचित अवस्था में कटाई एवं गुणवत्तापूर्ण कच्चे माल का चयन अंतिम उत्पाद की गुणवत्ता सुनिश्चित करता है। वाणी ज्वार की कटाई फूल आने के लगभग ४०–४५ दिन बाद उचित अवस्था में की जाती है। परिपक्वता का निर्धारण पारंपरिक दबाव परीक्षण द्वारा किया जाता है, जिसमें दानों से निकलने वाला दूधिया रस उपयुक्त नमी एवं प्राकृतिक मिठास का संकेत देता है। कटाई के तुरंत बाद बालियों को भूनाई इकाई तक पहुँचाया जाता है, जिससे उनकी ताजगी बनी रहती है तथा शर्करा के स्टार्च में परिवर्तन को रोका जा सकता है। यह प्रक्रिया उच्च गुणवत्ता वाले पोंक उत्पादन का आधार है।

चित्र १. चरण–१: पोंक उत्पादन हेतु कच्चे माल की खरीद एवं गुणवत्ता नियंत्रण

चरण २: प्रसंस्करण एवं रूपांतरण

इस चरण में वाणी ज्वार की कच्ची बालियों को पारंपरिक एवं वैज्ञानिक विधियों द्वारा खाद्य पोंक में परिवर्तित किया जाता है। बालियों को रेत एवं कोयले की नियंत्रित आँच पर समान रूप से भूना जाता है, जिससे उनका स्वाद, सुगंध एवं गुणवत्ता विकसित होती है। भूनाई के बाद बालियों को कुछ समय तक ढककर रखा जाता है, ताकि अवशिष्ट ऊष्मा एवं नमी बनी रहे और दाने कोमल बने रहें। इसके पश्चात हाथ से सावधानीपूर्वक दानों को भूसी से अलग किया जाता है, जिससे बिना क्षति के कोमल, समान आकार एवं उच्च गुणवत्ता वाला पोंक प्राप्त होता है। इस चरण में वाणी ज्वार की कच्ची बालियों को पारंपरिक एवं वैज्ञानिक विधियों द्वारा पोंक में परिवर्तित किया जाता है। नियंत्रित ताप पर रेत एवं कोयले की सहायता से समान रूप से भूनाई की जाती है, जिससे स्वाद, सुगंध एवं गुणवत्ता विकसित होती है। इसके बाद बालियों को कुछ समय तक ढककर रखा जाता है, ताकि अवशिष्ट ऊष्मा एवं नमी बनी रहे और दाने कोमल रहें। अंत में हाथ से सावधानीपूर्वक दानों को भूसी से अलग कर उच्च गुणवत्ता वाला, स्वच्छ एवं उपभोग योग्य पोंक तैयार किया जाता है।

चित्र २. चरण–२: पोंक का प्रसंस्करण एवं रूपांतरण

चरण ३: परिष्करण, पैकेजिंग एवं विपणन

इस चरण में पोंक की गुणवत्ता, आकर्षक प्रस्तुति एवं बाजार मूल्य पर विशेष ध्यान दिया जाता है। सबसे पहले भूसी एवं अशुद्धियों को हटाकर स्वच्छ, उपभोग योग्य पोंक तैयार किया जाता है। इसके बाद रंग, कोमलता एवं दानों के आकार के आधार पर ग्रेडिंग की जाती है तथा निम्न गुणवत्ता वाले दानों को अलग कर दिया जाता है। अंततः पोंक की उपयुक्त पैकेजिंग कर उसे सड़क किनारे

विक्रय केंद्रों एवं स्थानीय बाजारों में सीधे उपभोक्ताओं को बेचा जाता है, जिससे बेहतर खुदरा मूल्य प्राप्त होता है और कच्ची ज्वार की बिक्री की तुलना में उल्लेखनीय आय वृद्धि सुनिश्चित होती है।

चित्र ३. चरण–३: पोंक का परिष्करण, पैकेजिंग एवं विपणन

इस चरण में पोंक की गुणवत्ता, आकर्षक प्रस्तुति एवं बाजार मूल्य पर विशेष ध्यान दिया जाता है। सबसे पहले फटकाई द्वारा भूसी एवं अन्य अशुद्धियों को हटाकर स्वच्छ पोंक तैयार किया जाता है। इसके बाद रंग, आकार एवं कोमलता के आधार पर ग्रेडिंग कर उच्च गुणवत्ता वाले दानों का चयन किया जाता है। अंततः उपयुक्त पैकेजिंग के साथ पोंक को सड़क किनारे विक्रय केंद्रों एवं स्थानीय बाजारों में सीधे उपभोक्ताओं को बेचा जाता है, जिससे बेहतर मूल्य प्राप्त होता है और मूल्य संवर्धन के माध्यम से आय में उल्लेखनीय वृद्धि होती है।

यह वैल्यू चेन पारंपरिक ज्ञान को साइंटिफिक गाइडेंस और मार्केट लिंकेज के साथ जोड़ने पर ज़ोर देती है, जिससे खेत मज़दूरों को इनकम बढ़ाने, रोज़गार पैदा करने और छोटे बिज़नेस शुरू करने में मदद मिलती है, साथ ही पोंक की असलियत भी बनी रहती है।

गुणवत्तायुक्त पोंक उत्पादन के प्रमुख गुणवत्ता मानदंड

- **कटाई की अवस्था**: फूल आने के 40–45 दिन बाद (दूधिया अवस्था), जिससे दानों में उपयुक्त नमी एवं प्राकृतिक शर्करा बनी रहती है।
- **मुख्य किस्म:** वाणी (*Sorghum bicolor*), जो मुलायम, जैलीनुमा एंडोस्पर्म एवं अधिक प्राकृतिक मिठास के कारण पोंक उत्पादन के लिए सर्वाधिक उपयुक्त मानी जाती है।
- **भूनाई की विधि:** रेत एवं कोयले की नियंत्रित अप्रत्यक्ष भूनाई, जिससे समान भूनाई, विशिष्ट सुगंध तथा दानों की गुणवत्ता बनी रहती है।
- **वांछित गुणवत्ता:** कोमल, जैलीनुमा, चबाने योग्य तथा समान आकार के हरे दाने, जो उच्च उपभोक्ता स्वीकार्यता सुनिश्चित करते हैं।
- **आर्थिक महत्त्व:** मूल्यवर्धित मौसमी उत्पाद के रूप में प्रत्यक्ष विपणन द्वारा अधिक लाभ एवं किसानों/उद्यमियों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि।

सम्मान की फसल: आर्थिक, सामाजिक एवं पीढ़ीगत लाभ

कृषि प्रसार हस्तक्षेपों तथा मूल्य संवर्धन तकनीकों को अपनाने से अंकलेश्वर–भरूच–झगड़िया क्षेत्र के मौसमी खेत मजदूरों के जीवन में उल्लेखनीय परिवर्तन आया। कृषि मेला, किसान शिविर तथा एटीएमए/लाइन विभाग के प्रशिक्षण कार्यक्रमों से प्राप्त वैज्ञानिक ज्ञान के आधार पर लाभार्थियों ने दैनिक मजदूरी पर निर्भर रहने के बजाय पोंक उत्पादन एवं विपणन को लघु उद्यम के रूप में अपनाया। इससे उनकी आय, आजीविका की स्थिरता तथा सामाजिक सम्मान में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

आर्थिक लाभ: लगभग ५० दिनों के पोंक सीजन में एक परिवार की मौसमी आय ₹१०,००० से बढ़कर लगभग ₹३,७५,००० हो गई, जिसमें लगभग ₹१,७५,००० का शुद्ध लाभ प्राप्त हुआ। प्रतिदिन ७–८ किलोग्राम पोंक का उत्पादन एवं प्रत्यक्ष विपणन, साथ ही स्वच्छ भूनाई, सफाई, ग्रेडिंग एवं पैकेजिंग जैसी तकनीकों ने उत्पाद की गुणवत्ता और लाभप्रदता में उल्लेखनीय वृद्धि की।

सामाजिक प्रभाव: इस पहल से प्रत्येक गाँव में **१०–१५** लोगों के लिए मौसमी रोजगार के अवसर सृजित हुए। प्रशिक्षित परिवारों ने अन्य मजदूरों को भी वैज्ञानिक कटाई, कटाई उपरांत प्रसंस्करण तथा पोंक निर्माण का प्रशिक्षण देकर कौशल विकास, उद्यमिता एवं सामुदायिक सहयोग को बढ़ावा दिया।

पीढ़ीगत लाभ: बढ़ी हुई आय से परिवारों की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति में सुधार हुआ। बच्चों को बेहतर शिक्षा एवं करियर के अवसर प्राप्त हुए, जिससे अगली पीढ़ी के लिए सम्मानजनक जीवन, आर्थिक सुरक्षा एवं आत्मनिर्भरता की सुदृढ़ नींव तैयार हुई।

तालिका: पोंक उत्पादन का मौसमी अर्थशास्त्र: ५०-दिवसीय पारिवारिक उद्यम मॉडल

मापदंड	हस्तक्षेप से पूर्व	हस्तक्षेप के बाद	प्रमुख परिवर्तन
आजीविका	खेतिहर मजदूर	पोंक उत्पादन एवं प्रसंस्करण आधारित लघु उद्यम	दिहाड़ी मजदूरी से उद्यमिता की ओर परिवर्तन
कच्चा माल	लागू नहीं	प्रतिदिन २० किलोग्राम वाणी ज्वार (लगभग ₹२,५००)	५० दिनों में १,००० किलोग्राम ज्वार का प्रसंस्करण
उत्पादन (रिकवरी)	लागू नहीं	२० किलोग्राम ज्वार से ७–८ किलोग्राम पोंक	५० दिनों में लगभग ३७५ किलोग्राम पोंक उत्पादन
दैनिक बिक्री	लागू नहीं	लगभग ७.५ किलोग्राम पोंक	बाजार की मांग के अनुसार प्रत्यक्ष बिक्री
बाजार मूल्य	₹३००–₹४०० प्रतिदिन की मजदूरी	लगभग ₹१,००० प्रति किलोग्राम पोंक	मूल्य संवर्धन एवं प्रत्यक्ष विपणन से अधिक मूल्य प्राप्त
दैनिक आय	₹३००–₹४००	लगभग ₹७,५००	आय में उल्लेखनीय वृद्धि
कुल मौसमी आय (५० दिन)	लगभग ₹१०,०००	लगभग ₹३,७५,०००	लगभग ३७ गुना वृद्धि
प्रसंस्करण लागत	लागू नहीं	लगभग ₹७५,०००	भूनाई, सफाई, ग्रेडिंग एवं पैकेजिंग सहित
कुल लागत	लागू नहीं	लगभग ₹२,००,०००	कच्चा माल एवं प्रसंस्करण लागत
शुद्ध लाभ	लागू नहीं	लगभग ₹१,७५,०००	लगभग ४६ प्रतिशत लाभ मार्जिन
रोज़गार सृजन	सीमित	परिवार सहित प्रत्येक गाँव में १०–१५ मौसमी श्रमिकों को रोजगार	स्थानीय रोजगार के अवसरों में वृद्धि
कौशल एवं ज्ञान	पारंपरिक खेतिहर श्रम	वैज्ञानिक कटाई, कटाई उपरांत प्रसंस्करण, ग्रेडिंग, मूल्य संवर्धन एवं विपणन	कृषि मेला, किसान शिविर एवं एटीएमए कार्यक्रमों से क्षमता निर्माण

सीख एवं निष्कर्ष

यह सफलता की कहानी दर्शाती है कि जब पारंपरिक कृषि कौशल को वैज्ञानिक प्रशिक्षण, मूल्य संवर्धन तथा प्रत्यक्ष बाजार संपर्क के साथ जोड़ा जाता है, तो मौसमी खेत मजदूर सफल लघु उद्यमी बन सकते हैं। इस मॉडल से आय में उल्लेखनीय वृद्धि, स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन, उत्पाद की गुणवत्ता में सुधार तथा उद्यमिता और कौशल विकास को बढ़ावा मिला। बढ़ी हुई आय ने परिवारों के सामाजिक-आर्थिक स्तर में सुधार किया तथा अगली पीढ़ी के लिए बेहतर शिक्षा और रोजगार के अवसर सुनिश्चित किए। आज सफल पोंक उद्यमी केवल लाभार्थी नहीं, बल्कि कृषि मेला, किसान शिविर एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रेरक (रोल मॉडल) के रूप में अपनी सफलता, अनुभव और तकनीकी ज्ञान अन्य किसानों एवं खेत मजदूरों के साथ साझा कर रहे हैं। यह मॉडल दर्शाता है कि वैज्ञानिक कृषि प्रसार, मूल्य संवर्धन एवं प्रभावी बाजार संपर्क के माध्यम से सम्मानजनक आजीविका, आत्मनिर्भरता तथा समावेशी एवं सतत ग्रामीण विकास को सशक्त बनाया जा सकता है।